© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 01 | January - March 2022

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी के अविभाजित मध्य प्रदेश यात्राओं का एक अध्ययन

अभिषेक खरे, पी. एच. डी. शोधार्थी

इतिहास विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा, (म०प्र०)

सारांश

सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह रूपी अस्त्र दुनिया को सौंपने वाले महात्मा गांधी जी सदैव समस्त मानवता के लिए प्रेरणा स्रोत रहेंगे। हिंसा, आतंकवाद से जूझती दुनिया के लिए महात्मा गांधी जी के अहिंसात्मक साधनों का सर्वोपरि महत्व है। शांति हमारी अनिवार्य आवश्यकता है एवं संपूर्ण मानवता के कल्याण का मंत्र है। अहिंसा व शांति से ही हम विकास को प्राप्त कर सकते हैं। इन कारगर एवं अभेद्य अस्त्रों को दुनिया को सौंपने वाले महात्मा गांधी जी सदैव प्रासंगिक रहेंगे। महात्मा गांधी जी दक्षिण अफ्रीका में कार्य करने के बाद भारत आए। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व किया। गांधी जी के पास एक स्पष्ट व निश्चित सोच थी कि अहिंसात्मक साधनों से ही वह भारत को स्वतंत्रता दिलाएंगे। इस सोच को उन्होंने कार्य रूप में परिणित किया। भारत को आजादी दिला कर पूरी दुनिया में जनता के अधिकारों एवं स्वतंत्रता के प्रति आंदोलन के लिए प्रेरित किया। उन्हें दुनिया में आम जनता महात्मा गांधी के नाम से जानती हैं।

मूल शब्द : सत्य, अहिंसा, **यात्रा,** सामाजिक, राजनीतिक, आंदोलनों, इत्यादि।

प्रस्तावना

महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने गांधी जी के बारे में कहा था कि “भविष्य की पीढ़ियों को इस बात पर विश्वास करने में मुश्किल होगी कि हाड़-मांस से बना ऐसा कोई व्यक्ति भी कभी धरती पर आया था।” गांधी के विचारों ने दुनिया भर के लोगों को न सिर्फ प्रेरित किया बल्कि

करुणा, सहिष्णुता और शांति के दृष्टिकोण से भारत और दुनिया को बदलने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपने समस्त जीवन में सिद्धांतों और प्रथाओं को विकसित करने पर ज़ोर दिया और साथ ही दुनिया भर में हाशिये के समूहों और उत्पीड़ित समुदायों की आवाज़ उठाने में भी अतुलनीय योगदान दिया। साथ ही महात्मा गांधी ने विश्व के बड़े नैतिक और राजनीतिक नेताओं जैसे- मार्टिन लूथर किंग जूनियर, नेल्सन मंडेला और दलाई लामा आदि को प्रेरित किया तथा लैटिन अमेरिका, एशिया, मध्य पूर्व तथा यूरोप में सामाजिक एवं राजनीतिक आंदोलनों को प्रभावित किया। गांधी जी का जन्म पोरबंदर की रियासत में 2 अक्तूबर, 1869 में हुआ था। उनके पिता करमचंद गांधी, पोरबंदर रियासत के दीवान थे और उनकी माँ का नाम पुतलीबाई था। गांधी जी अपने माता-पिता की चौथी संतान थे। मात्र 13 वर्ष की उम्र में गांधी जी का विवाह कस्तूरबा कपाड़िया से कर दिया गया। गांधी जी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा राजकोट से प्राप्त की और बाद में वे वकालत की पढ़ाई करने के लिये लंदन चले गए। उल्लेखनीय है कि लंदन में ही उनके एक दोस्त ने उन्हें भगवद् गीता से परिचित कराया और इसका प्रभाव गांधी जी की अन्य गतिविधियों पर स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। वकालत की पढ़ाई के बाद जब गांधी भारत वापस लौटे तो उन्हें वकील के रूप में नौकरी प्राप्त करने में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। वर्ष 1893 में दादा अब्दुल्ला (एक व्यापारी जिनका दक्षिण अफ्रीका में शिपिंग का व्यापार था) ने गांधी जी को दक्षिण अफ्रीका में मुकदमा लड़ने के लिये आमंत्रित किया, जिसे गांधी जी ने स्वीकार कर लिया और गांधी जी दक्षिण अफ्रीका के लिये रवाना हो गए। विदित है कि गांधी जी के इस निर्णय ने उनके राजनीतिक जीवन को काफी प्रभावित किया।

महात्मा गांधी जी के अविभाजित मध्य प्रदेश यात्रा

- **प्रथम यात्रा 1918**

29 मार्च 1918 को सर्वप्रथम महात्मा गांधी जी मध्य प्रदेश के इंदौर शहर में पधारे थे। गांधी जी यहां अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के अष्टम अधिवेशन के अध्यक्ष के रूप में आएं थे। इस सम्मेलन में कुछ प्रस्ताव स्वीकृत किए गए जिसका राष्ट्रीय राजनीति एवं एकीकरण में काफी महत्व था। .जैसे राष्ट्रभाषा की स्वीकृति हिंदी को ही दी जाएं व मद्रास में हिंदी का प्रचार प्रसार कार्य किया जाएं। गांधी जी ने मध्य भारत हिंदी साहित्य समिति के निजी भवन का भी शिलान्यास किया था।

- **द्वितीय यात्रा 1920**

20 व 21 दिसंबर 1920 को गांधी जी ने अपनी दूसरी यात्रा अविभाजित मध्य प्रदेश के रायपुर, धमतरी और कुरूद में की थी। गांधी जी ने रायपुर में जहां भाषण दिया था वह अब गांधी चौक के नाम से जाना जाता है। यहीं से गांधी जी धमतरी तथा कुरूद गए। गांधी जी कंडेल नहर सत्याग्रह से काफी प्रभावित थे इसलिए उन्होंने कुरूद की यात्रा की और वहां के जनमानसं द्वारा सत्याग्रह के सफल संचालन के लिए उन्मुक्त कठ से प्रशंसा की।

- **तीसरी यात्रा 1921**

6 जनवरी 1921 को महात्मा गांधी जी, अली बंधुओं के साथ छिंदवाड़ा आएं थे। यहां वे सेठ श्री नरसिंह दास अग्रवाल की धर्मशाला में विश्राम किए तत्पश्चात चिटनवीसगंज के मैदान में विशाल सभा को संबोधित किया। गांधी जी ने हिंदू मुस्लिम एकता व छुआ - छात मिटाने की बात कही। साथ ही महिलाओं की सभा को भी संबोधित किया था। यहां की महिलाओं ने गांधी जी को तिलक स्वराज कोष के लिए धन और आभूषण प्रदान किए।

- **चौथी यात्रा 1921**

1920 के ऐतिहासिक अधिवेशन के पश्चात गांधी जी निर्विवाद नेता के रूप में उभरे थे। गांधी जी नागपुर से सिवनी होते हुए, 20 मार्च 1921 को अपनी धर्मपत्नी कस्तूरबा गांधी जी के साथ जबलपुर आएं थे और श्री श्याम सुंदर भार्गव की कोठी "खजांची भवन में रुके थे। यहां वें गोल बाजार के विशाल मैदान में आम समा को संबोधित किया था।

- **पांचवी यात्रा 1921**

गांधी जी अपनी पांचवी यात्रा में मध्य प्रदेश के खंडवा शहर गए थे। यहां गांधी जी ने आम सभा को संबोधित किया था, इस संबोधन में उन्होंने स्वदेशी और खादी पर विशेष बल दिया था। आज यह स्थल घंटाघर के रूप में जाना जाता है।

- **छठवीं यात्रा 1929**

भोपाल के नवाब हमीदुल्लाह खान के निमंत्रण को स्वीकार करते हुए गांधी जी 19 सितंबर 1929 को मध्य प्रदेश के भोपाल शहर में आएं। यहां वे 3 दिन रुके। बेनजीर मैदान में सार्वजनिक सभा को संबोधित व राहत मंजिल के सामने प्रार्थना सभा का आयोजन किया था। यहां गांधी जी ने रामराज्य का मतलब समझाया था उन्होंने कहा कि "मेरे लिए राम और रहीम में कोई अंतर नहीं है, मेरे लिए तो सत्य और सत्कार्य ही ईश्वर है।

- **सातवीं यात्रा 1933**

22 नवंबर से 8 दिसंबर 1933 तक गांधी जी ने अविभाजित मध्य प्रदेश के विभिन्न शहरों में यात्राएं की। इस यात्रा के दौरान गांधी जी दुर्ग, रायपुर, बिलासपुर, बालाघाट, सिवनी, छिंदवाड़ा

बैतूल, इटारसी, करेली, अनंतपुर, दमोह, सागर, कटनी, सिहोरा, जबलपुर, मंडला, सोहागपुर, हरदा, खंडवा व बुरहानपुर भी गए थे। गांधी जी की यह 17 दिवसीय यात्रा थी।

- **आठवीं यात्रा 1935**

20 अप्रैल 1935 को गांधी जी इंदौर में आयोजित 24 वें हिंदी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन के अध्यक्ष के रूप में आएं थे। गांधी जी ने अपनी पहली मध्य प्रदेश यात्रा इंदौर की थी। गांघी जी ने इंदौर के नजदीक स्थित महू के हाई स्कूल में अपना भाषण दिया था।

- **नौवीं यात्रा 1941**

फरवरी 1941 में इलाहाबाद यात्रा के दौरान गांधी जी कुछ समय के लिए जबलपुर रुके थे। यहां से वें मीरगंज स्टेशन व भेड़ाघाट व बंदर कूदनी गए थे। उनके साथ महादेव भाई देसाई, कनु देसाई, वहां महाराजा कुमार विजयनगरम भी उपस्थित थे। गांधी जी ने रत्नहीर नामक भवन में विश्राम किया था।

- **दसवीं यात्रा 1942**

बनारस की ओर जाते समय 27 अप्रैल 1942 को गांधी जी जबलपुर पहुंचे। जहां वे द्वारका प्रसाद मिश्र जी के यहां गए थे। यहां से गांधी जी द्वारका प्रसाद जी के साथ विक्टोरिया अस्पताल जाकर सेठ गोविंद दास का हाल-चाल पूछा। यह गांधी जी के अविभाजित मध्य प्रदेश की अंतिम यात्रा थी।

उपसंहार

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन 'भारतीय इतिहास' में लम्बे समय तक चलने वाला एक प्रमुख राष्ट्रीय आन्दोलन था। इस आन्दोलन की औपचारिक शुरुआत 1885 ई. में कांग्रेस की स्थापना के साथ

हुई थी, जो कुछ उतार-चढ़ावों के साथ 15 अगस्त, 1947 ई. तक अनवरत रूप से जारी रहा। वर्ष 1857 से भारतीय राष्ट्रवाद के उदय का प्रारम्भ माना जाता है। राष्ट्रीय साहित्य और देश के आर्थिक शोषण ने भी राष्ट्रवाद को जगाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन (तृतीय चरण) इस काल में महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने पूर्ण स्वरज्य की प्राप्ति के लिए आन्दोलन प्रारम्भ किया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी की भूमिका को महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता के लिए आंदोलन की अगुवाई की थी। महात्मा गांधी की शांतिपूर्ण और अहिंसक नीतियों ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ स्वतंत्रता संघर्ष का आधार बनाया। दक्षिण अफ्रीका पहुंच कर उन्होंने भारत मूल के लोगो को बड़ी दयनीय अवस्था में देखा। उन्होंने उनकी दशा सुधारने का फैसला कर लिया और भारतीयों को उनके अधिकारों का बोध कराया। उन्होने उनमे जागृति लाकर उन्हें संगठित किया। दक्षिण अफ्रीका के आन्दोलन में सफलता के बाद गाधी जी भारत लौट आए। वे कांग्रेस पार्टी के सदस्य बन गए उनके नेतृत्व में कांग्रेस ने अहिंसा का मार्ग अपनाया इसके साथ ही उन्होंने काग्रेस पार्टी के सामने - समाज सुधार और हिन्दू - मुस्लिम एकता जैसे रचनात्मक कार्यो को सुझाया। छुआछूत के खिलाफ उन्होंने जोरदार आवाज उठाई और अछूतो को 'हरिजन ' जैसा आदरणीय सबोधन दिया। हिन्दू - मुस्लिम एकता की रक्षा पर तो उन्होने अपनी जान तक दे दी। ब्रिटिश सरकार ने स्वतन्त्रता आन्दोलन को दबाने का भरसक प्रयास किया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. चंद्र विपिन, मुखर्जी मृदुला, मुखर्जी आदित्य, पानिकर के. न, महाजन सुचेता भारत का रवतंत्रता रांघर्ष, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय 2010 |
2. सरकार सुमित, अनुवादक सुशीला डोमाल, आधुनिक भारत (1885-1947) प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्रा. लि नई दिल्ली, 2009 |

3. राय सत्या.एम, भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय चतुर्थ संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण 2009 पुनः मार्च 2014 |
4. गांधी एम. के, मेरे सपनों का भारत, संग्राहक (आरके. प्रभु), नवजीवन प्रकाशन।
5. गांधी एम.के, सर्वोदय, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद |
6. गांधी एम. के, हिंद स्वराज, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 1940 |
7. प्रो. ब्रजगोपाल, डॉ.एस.अखिलेश, स्वतंत्रता आंदोलन, गायत्री पब्लिकेशन पब्लिशर्स एंड डिसटीब्यूटर्स, प्रथम संस्करण, 2003 |
8. जैन यशपाल, गांधी शिक्षा, पहला भाग, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली ।
9. शर्मा डॉ. वीरेंद्र, भारत के पुनर्निर्माण में गांधी जी का योगदान, श्री पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
10. गांधी एम. के, अनासक्ति योग, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली। ।